National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(48): 165-166
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

Correspondence:
डॉ.टी.लतामंगेश
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
तिरुपती – 517507, आंध्रप्रदेश

हिंदी साहित्य के विकास में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का योगदान

डॉ. टी. लतामंगेश

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एक युगप्रवर्तक साहित्यकार, आलोचक, इतिहासकार और निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने न केवल हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में रचनात्मक योगदान दिया, बल्कि हिंदी साहित्य के पुनर्लेखन एवं इतिहास लेखन की धारा को नया आयाम दिया। उनके विचार, भाषा की शुद्धता, गहन अनुसंधान और शैलीगत सौंदर्य ने हिंदी को एक नई बौद्धिक दिशा प्रदान की।

हिंदी साहित्य के इतिहास में अनेक विद्वानों और लेखकों ने अपनी लेखनी से अमूल्य योगदान दिया है, परंतु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण और विशिष्ट है। वे न केवल एक उच्चकोटि के साहित्यकार थे, बल्कि साहित्य के साथ-साथ संस्कृति, इतिहास और दर्शन के भी गहन अध्येता थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दृष्टि, गहराई और बौद्धिक परिपक्वता प्रदान की। वे न केवल एक महान लेखक थे, बल्कि एक चिंतक, आलोचक, इतिहासकार और संस्कृति विश्लेषक भी थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को केवल भावनाओं तक सीमित न रखकर उसमें बौद्धिकता, चिंतन और शोध की गहराई जोड़ दी। उनके साहित्य में परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

जीवन परिचय

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को बलिया ज़िले (उत्तर प्रदेश) के दुबे का छपरा नामक गाँव में हुआ था। वे संस्कृत, हिंदी, पाली, प्राकृत, बांग्ला और कई अन्य भाषाओं में प्रवीण थे। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और शांति निकेतन (विश्वभारती विश्वविद्यालय) में उन्होंने अध्यापन कार्य किया और अनेक प्रतिभाशाली छात्रों को दिशा दी, जिनमें अज्ञेय, नामवर सिंह आदि प्रमुख हैं।

साहित्यिक इतिहास का पुनरावलोकन

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के इतिहास को केवल कालानुक्रमिक घटनाओं का विवरण मानने के बजाय उसमें संस्कृति, समाज और मानवीय विकास की प्रक्रिया को जोड़कर देखा। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "हिंदी साहित्य का इतिहास" ने साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक की साहित्यिक प्रवृत्तियों का विस्तृत और गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि हिंदी साहित्य केवल भक्ति या रीतिकाल से नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। आचार्य द्विवेदी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करना है। उनकी कृति "हिंदी साहित्य की भूमिका" तथा "मध्यकालीन हिंदी साहित्य" ने इस क्षेत्र

में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। उन्होंने भक्ति आंदोलन को सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में देखा तथा कबीर, तुलसी, सूरदास आदि संत कवियों की रचनाओं का मूल्यांकन ऐतिहासिक संदर्भों में किया।

निबंध लेखन में मौलिकता

द्विवेदी जी ने हिंदी निबंध को केवल सूचनात्मक माध्यम नहीं, बल्कि चिंतन, विमर्श और सांस्कृतिक विश्लेषण का एक प्रभावशाली उपकरण बनाया। उनके निबंधों में भाषा की सरलता के साथ विचारों की गंभीरता और दृष्टिकोण की गहराई मिलती है। "अशोक के फूल", "कल्पलता", और "विचार और समीक्षा" जैसे निबंध संग्रहों में भारतीय परंपरा, इतिहास और साहित्य की विवेचना अत्यंत सजीव और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत की गई है। हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी निबंध विधा के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उनके निबंधों में विचारों की गंभीरता, भाषाशैली की परिष्कृतता और विषय की व्यापकता स्पष्ट दिखाई देती है। "अशोक के फूल," "कुटज," "कल्पलता," "प्रेमचंद" आदि उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं। उन्होंने निबंध को साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध किया और इसे महज जानकारी का माध्यम न बनाकर विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बनाया।

उपन्यास लेखन में सांस्कृतिक दृष्टिकोण

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास लिखकर हिंदी कथा-साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनका प्रसिद्ध उपन्यास "बाणभट्ट की आत्मकथा" एक ऐतिहासिक पात्र के माध्यम से तत्कालीन समाज, राजनीति और साहित्यिक परिवेश की अनूठी झलक प्रस्तुत करता है। "चारुचंद्रलेख", "अनामदास का पोथा" और "पुनर्नवा" जैसे उपन्यासों में भी उन्होंने भारतीय समाज और जीवन-मूल्यों की सांस्कृतिक खोज की है। इन उपन्यासों में उन्होंने इतिहास, दर्शन, संस्कृति और मानव मनोविज्ञान का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया। "बाणभट्ट की आत्मकथा" में एक इतिहास पुरुष के माध्यम से आधुनिक प्रश्नों को उठाया गया है। उनका उपन्यास लेखन भी ऐतिहासिकता और संस्कृति बोध से भरपूर है।

भक्ति आंदोलन की पुनर्व्याख्या

भक्ति आंदोलन पर उनकी गहरी समझ और शोधपरक दृष्टिकोण उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी पुस्तक "कबीर" कबीर की वाणी, विचारधारा और युगबोध का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। उन्होंने सूर, तुलसी और नाथपंथी परंपराओं पर भी गंभीर कार्य किया, जिससे भक्ति साहित्य के अध्ययन को एक विद्वत्तापूर्ण आधार प्राप्त हुआ। द्विवेदी जी ने भक्ति आंदोलन को भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक चेतना के रूप में देखा। उन्होंने इसे मात्र धार्मिक आंदोलन न मानकर सामाजिक जागरण और वैचारिक स्वतंत्रता का आंदोलन कहा। उनकी "कबीर" पर लिखी गई पुस्तक आज भी कबीर साहित्य का मर्म समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

संस्कृति के व्याख्याता

हजारी प्रसाद द्विवेदी केवल साहित्यकार नहीं थे, वे भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ व्याख्याता भी थे। उनका मानना था कि साहित्य समाज और संस्कृति का दर्पण होता है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय परंपरा, लोकमान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने और सहेजने का प्रयास किया।

शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में योगदान

आचार्य द्विवेदी केवल लेखक नहीं, बल्कि एक महान शिक्षक भी थे। शांति निकेतन में उन्होंने अनेक विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान किया, बल्कि उनकी साहित्यिक चेतना को भी जागृत किया। उन्होंने विद्यार्थियों में अनुसंधान, मौलिकता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया।

निष्कर्ष

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के ऐसे दीपस्तंभ हैं, जिनकी रोशनी आज भी साहित्य के पथ को आलोकित कर रही है। उन्होंने हिंदी साहित्य को केवल भावनाओं का माध्यम नहीं, बल्कि विचार, विवेक और सांस्कृतिक बोध का सशक्त साधन बनाया। उनके साहित्यिक योगदान को समझना हिंदी भाषा और संस्कृति की आत्मा को समझने के समान है। उनका कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के उन विरले साहित्यकारों में से हैं, जिन्होंने अपने लेखन से साहित्य की परिभाषा, दिशा और दृष्टि तीनों को नया आयाम दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य को सांस्कृतिक चेतना से जोड़ा और इसे गहराई, गरिमा और गौरव प्रदान किया। उनके निबंधों, उपन्यासों और आलोचनात्मक लेखन में न केवल साहित्यिक सौंदर्य है, बल्कि उसमें समाज, संस्कृति और मानवता की व्यापक दृष्टि भी समाहित है। उनके साहित्यिक योगदान को समझे बिना हिंदी साहित्य की पूर्णता की कल्पना अधूरी मानी जाती है। निस्संदेह, वे हिंदी साहित्य के गौरवस्तंभ हैं।

संदर्भ सूची

हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ श्रीनिवास शर्मा
आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह
हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ, रामेश्वरलाल खंडेलवाल
बाणभट्ट की आत्माकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी